

सिंकंदरा व अतराफ के 14 औलियाए की सीरत

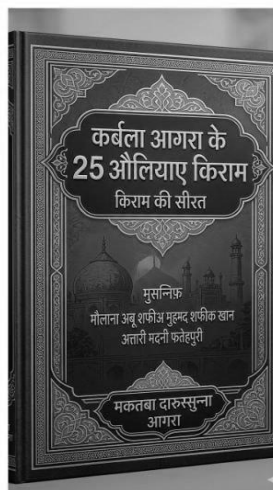
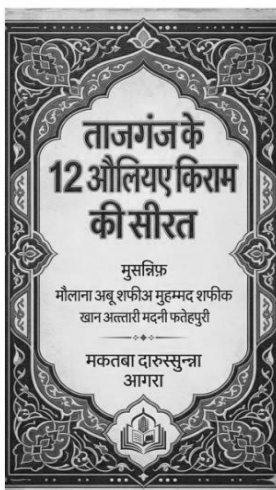
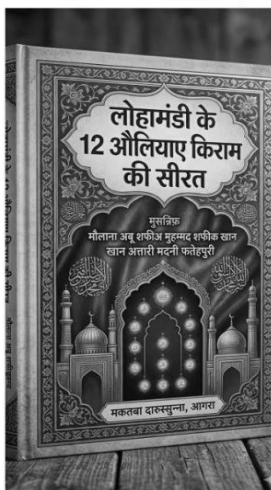
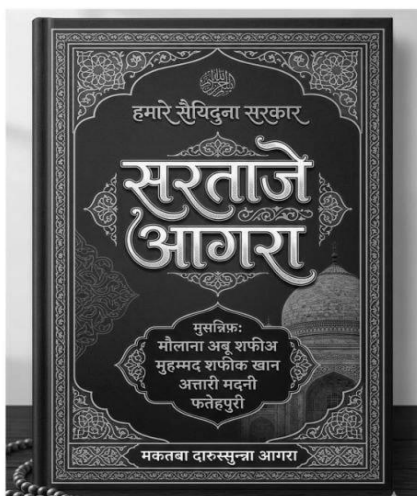
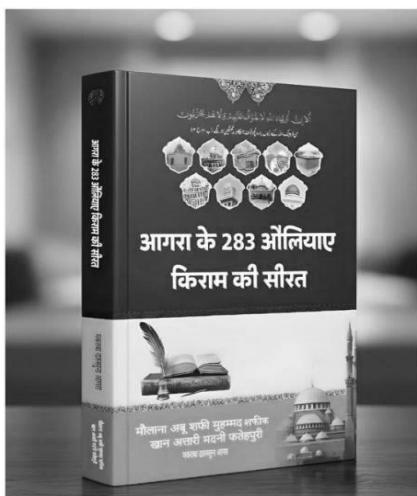
मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान
अत्तारी मदनी फतेहपुरी



मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों ।



किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ़ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअत होने की वजह से अपने नाम के साथ अत्तारी लिखते हैं, आपकी विलादत कस्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ए. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क्रियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ़ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उलूम बनाम जामिया अरबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में **क्रारी इक़बाल अहमद अत्तारी** से कुरआने पाक नाज़िरा और हज़रत **मौलाना अतीकुर्रहमान मिस्बाही** से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ़ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल

जामिअतुल अशरफिया मुबारकपुर आ'जमगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उलूम ग़ौसिया (जो जिला आ'जमगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना, फैज़ाने अत्तार नेपालगंज, नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए हदीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फरागत के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, आगरा तशरीफ़ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअतुल मदीना तशरीफ़ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआत के दरजए सानिया में चलने वाली इल्मे सर्फ़ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ में चलने वाली इल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह अश शफ़ीकुन नोअमानी तसनीफ़ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ़ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली हदीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह शफ़ीकिया तहरीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफ़ात का सिलसिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिअ आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़िव्या की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक्रर्रि और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक्रतन फ़वक्रतन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ़ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत अता करके मौसूफ़ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आज़िज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारक पर हाज़िरी का तरीक़ा येह है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारक की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक्रा! आप पर सलाम हो।

(فتاویٰ رضویہ، ۹/۵۲۲، خزائن آراء و فتاویٰ مجلس مرکز الاولیاء لاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलगरज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो।

आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़

عَنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैखुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख़ के मलफ़ूज़ात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुजुर्ग़ानि दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क्रियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (प, ४, آل عمران, १६९)।

लेकिन उन बुजुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, खाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है ।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए । आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुजुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

खानवादे चिश्तिया के बुजुर्गाने दीन

खानवादे चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख सिधारी चिश्ती, शैख ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुजुर्गाने चिश्त अहले बहिश्त का तज़किरा इस किताब में मौजूद है ।

खानवादे नक़्शबंदिया के बुजुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख़्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए शत्तारिया के बुजुर्गाने दीन

और मशाइखीने शत्तारिया में शैख ज़ियाउल्लाह, शैख अब्दुल्लाह, शैख बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए मदारिया के बुजुर्गाने दीन

और खानवादाए मदारिया में शाह फ़र्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़िकरा मौजूद है ।

नक्शबंदिया पौधे में चिशितया शाख पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूर मारुफ़ है, इस की शाखें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुन्इम, खलीफ़ा अबुल कासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख वली मुहम्मद वगैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है ।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख अबुल फ़त्ताह, मीर अबुल गैस बुखारी, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद अहमद बुखारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख बा यज़ीद शरवानी, शैख बा यज़ीद खवेशगी, ख्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुखारी, शैख चंदन कुरैशी, मौलाना शैख हसन शीराज़ी, शैख हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख्वाजा खिज़र, शैख खलील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफीअ सब्ज़ पोश, मीर रफीउज़्ज़मान, शैख सालिम, सक्रा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल्लाह खटवासन, शैख अब्दुल्लाह बुखारी, शैख अब्दुलहकीम, ख्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख अबदी, शैख फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख कमाल, शैख कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख मुहिबुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुखारी, शैख मुहम्मद ज़ाहिद, शैख मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख नाज़िर, शैख नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख यूसुफ़ लंक, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियाँ रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी खाकी शाह, बीबी कुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं ।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक्रअत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक्रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, खुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख बुढन शत्तारी, शैख चंदन कुरैशी, शैख नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख अबुल फ़तह मक्की, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख मुबारक, शैख ज़ैनुद्दीन, शैख शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारसी वगैरा बाबरी, हुमायूनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज़्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख मुनव्वर चिश्ती, शैख आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल वहहाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख अब्दुर्हमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़ल, शैख अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्ज़ुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईखीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख मुहम्मदी, शैख मुहम्मद सालेह, शैख नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्शीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सलतनत के तनज़्ज़ुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्ज़ुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफ़ा और मशाईखीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक्ररीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक़ यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईखीन की खानकाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क्रद्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ़ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए क़िबार यानी बड़े औलियाए क़िराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वग़ैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवमैँट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख़
तुर्बुतों में खाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
खाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की खानकाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बागात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर गैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में गैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिलज़, कॉटन मिलज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरों मारुफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज़्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के बुजुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख़्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़््शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने “बोस्ताने अख्यार” नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम “आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत” दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर खुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्हीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी खूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़िकरा मुस्तनद तारीखी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक्रार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला खुद को आगरा की गलियों, खानकाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक्किक्कीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीखी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक्कीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

❦ सदकए जारिया का बेहतरीन मौका ❦

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक्राबिर व औलियाए किराम की मुकद्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आखिरत सँवारें।

📖 किताब: बोस्ताने अख्यार

🏠 मौजू: आगरा के 283 बुजुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, गरीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक्रसीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक्रसीम रेट:

◆ 1 किताब — ₹350

◆ 5 किताब — ₹1750

◆ 10 किताब — ₹3500

✨ जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

✨ बुजुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल कीमत 700 रुपये रिआयती कीमत 350 रुपये

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की प्यारी सीरत सिकंदरा और रुंकता के दर्मियान

(1) शाह फ़तह अली

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के मुताअख़िखरीन बुजुर्गों में से हैं । आप रहमतुल्लाह अलैह के हालात ला इल्मी के पर्दा में हैं । मज़ार मुबारक सिकंदरा और रुंकता के बीच में पक्की सड़क के किनारे वाक़ेअ है, सल्लू शाह मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह आप ही के मुरीद थे । (बोस्ताने अख्यार, पेज 133)

(2) शैख़ अब्दुल हकीम

आप रहमतुल्लाह अलैह हिन्दुस्तान के उन बा कमाल बुजुर्गों में से हैं जिन्होंने इशाअते इस्लाम पर कमर बांध कर हिन्दुस्तान के जुल्मात में "अल्लाहु नूरुस्समावाति वल अर्द" (तर्जुमा: अल्लाह ही के नूर से आसमान और ज़मीन की रौशनी है) का बर्क़ी नूरानी लैम्प रौशन किया, कभी आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में क़दम नहीं रखा, तमाम उम्र उसी जगह जहां आप का मज़ार वाक़ेअ है क्रियाम फरमा कर लोगों को सीधे रास्ते पर चलाते रहे ।

एक मर्तबा एक नौजवान ने आप रहमतुल्लाह अलैह की रहनुमाई से सिराते मुस्तक़ीम पर क़दम रखा और शर्फ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में रहने लगा । उस के अज़ीज़ों ने अकबर बादशाह के दरबार में हाज़िर हो कर शिकायत की कि फुलां दरवेश ने हमारे अज़ीज़ को ज़बरदस्ती अपने रंग में रंग लिया है । अकबर बादशाह

के दरबार से आप रहमतुल्लाह अलैह के दरबार में हाज़िर होने का हुक्म सादिर हुआ, अभी अहकाम जारी ना हुए थे कि आप रहमतुल्लाह अलैह को कश्फ़ो इल्हाम से येह हाल मालूम हो गया, उस वक़्त आगरा की तरफ़ रवाना हुए। जब शहर के किनारे यानी चहार सू दरवाज़ा पर पहुंचे तो ज़ब्रए इलाही से बे खुद हो कर निहायत ज़ोर से “इल्लल्लाहु” का नारा मारा, उस नारा की आवाज़ सुनते ही जिस क़द्र लोग उस जगह मौजूद थे बे इख़्तियार हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह के पास जमा हो गए और इसरार करने लगे कि हमें अपने रंग में रंग लीजिए।

इसी अर्से में इत्तिफ़ाक़ से बादशाह की सवारी उधर से गुज़री और येह जमाव देख कर हाल पूछा, जब येह हाल मालूम हुआ तो दरबार में हाज़िर होने का हुक्म मंसूख करके उसी जगह आप रहमतुल्लाह अलैह को रुख़स्त फ़रमाया, हर चंद अकबर बादशाह ने इसरार किया मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने कोई जागीर या रोज़ीना क़बूल नहीं फ़रमाया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मथुरा की सड़क पर सिकंदरा से कुछ आगे वाक़ेअ है, एक शाबान को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है। शहर के तमाम तकियादार फ़क़ीर सवा सवा सेर हर आदमी मुख़्तलिफ़ खाने पका कर ले जाते हैं और यक़जा करके फ़ातिहा के बाद तक्रसीम करते हैं, येह अजीब बात है कि इस में से चंद हिस्सा कव्वों के वास्ते अलैहिदा कर के रख दिए जाते हैं, जिनके खाने के वास्ते बहुत से कव्वे जमा हो जाते हैं, येह सिल्सिला एक करामत की यादगार में चला आता है। शाह मुश्ताक़ रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ास मुरीदों में थे। (बोस्ताने अख़्यार, पेज 111.112)

(3) शाह मुश्ताक़

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख अब्दुल हकीम रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और आगरा के पुराने बुजुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** सिकंदरा के रास्ते में पक्की सड़क के किनारे पर वाक़ेअ है, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की वजह से इस मक़ाम पर सड़क को ख़म यानी मोड़ दिया गया है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज210)

कंधारी (खंदारी)

(4) शैख अब्दुल्लाह चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद के पुराने बुजुर्गों में से हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह के हालात किसी किताब में नज़र से नहीं गुज़रे। **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल कंधारी एक हुजरे के अंदर वाक़ेअ और निहायत बा फ़ैज़ और दिलचस्प मक़ाम है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज101)

मौज़ा मऊ के सिवाना

(5) बेदार शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के तारिकुद दुनिया यानी दुनिया को छोड़ने वाले बुजुर्गों में से हैं, **मज़ार मुबारक** मौज़ा मऊ के सिवानह में पक्की सड़क के किनारे सतीला मुत्तसिल मील नंबर, 1, एक बुलंद टीले पर वाक़ेअ है, करीब ही आप रहमतुल्लाह अलैह का तकिया मौजूद है, जिसमें एक छोटी सी कनाती मस्जिद और चंद इमली और नीम के दरख़्त बाक़ी है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज60)

(6) शैख महमूद बंजारा

आप रहमतुल्लाह अलैह खूबान सकना आगरा में बड़े साहिबे निस्बत और आरिफ़े हक़ीक़त बुजुर्ग थे। आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ास करामत येह थी कि जिस किसी को जिन या भूत वग़ैरा किसी किस्म का आसेब होता था तो जिस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम उस के सामने लिया जाता या आप रहमतुल्लाह अलैह के हाथ से फूल ले जा कर उस को सुन्धाया जाता तो वो फ़ौरन होशियार और तंदरुस्त हो जाता था। गर्ज़ कि सुलैमानी विलायत आप रहमतुल्लाह अलैह को हासिल थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक दरिया के किनारे सिवानह मौज़ा मऊ में सतीला के क़रीब एक बुलंद टीले पर वाक़ेअ और महमूद पातली के मज़ार के नाम से मौसूम है। (बोस्ताने अख़बार, पेज208)

मौज़ा घटवासन

(7) मीर सैय्यिद जलालुद्दीन क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद शैख़ैन क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे और आगरा के अकाबिर सादात से हैं। बड़े आबिदो ज़ाहिद और मुतावक्किल बुजुर्ग थे, इब्तिदा से इंतिहा तक गोशए उज़लत में बैठे रहे, “फ़क़ीरों में से बुरा फ़क़ीर वो है जो अमीरों के दरवाज़े पर जाये” पर कारबन्द और अमीरों की सोहबत से बहुत परहेज़ करते यानी बचते थे।

हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़ से लोगों को मुरीद किया करते थे, सैय्यिद मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद दाऊद रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह दो साहिब ज़ादे थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के बाद सैय्यिद दाऊद आप रहमतुल्लाह अलैह के जानशीन हुए।

25 सफ़र 983 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, मज़ार मुबारक मौज़ा घटवासन मुत्तसिल आगरा में मौजूद है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज66.67)

(8) हाजी शम्सुद्दीन अली हरवी

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने के मशाईखीने किराम में से हैं, मज़ार मुबारक अंदर सिवानह मौज़ा घटवासन बलूनता काछी के खेत में वाक़ेअ है, जिस पर येह इबारत लिखी हुई है:

तारीख़े वफ़ात मरहूम मग़फ़ूरी हाजी हरमैन शरीफ़ैन हाजी शम्सुद्दीन अली हरवी 1010 हिजरी।

(बोस्ताने अख्यार, पेज89)

नगला जवाहिर

(9) मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी (मश्कीं क़लम)

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह नेअमतुल्लाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह की नस्ल से हैं, दुन्यवी उलूम में शाह ग़यास और मौलाना राकमी के शागिर्दे रशीद और तरीक़त में शैख़ फ़ैजुल्लाह चिश्ती सहारनपुरी के दस्त गिरिफ़्ता थे। हफ़्त क़लम में उस्ताद और ख़त्ते नस्तालीक़ में अपना सानी ना रखते थे, सुखन गोई में ख़ास मलका हासिल था और क़लाम निहायत पसंदीदा होता था, वस्फ़ी तखल्लुस और जहांगीर बादशाह के दरबार से **मश्कीं क़लम** खिताब मिला हुआ था।

आप रहमतुल्लाह अलैह दिल बयार और दस्त ब कार के मिस्दाक़ और मुलाज़िमत शाही में दाखिल थे, इलाहाबाद वग़ैरा में अक्सर कतबे आप रहमतुल्लाह अलैह की जादू निगारी की यादगार हैं,

आप रहमतुल्लाह अलैह के दो साहिब ज़ादे हैं जिनका नाम मीर मुहम्मद सालेह कश्फ़ी रहमतुल्लाह अलैह और मीर मोमिन रहमतुल्लाह अलैह है, इन दोनों का ज़िक्रे खैर इस किताब में मौजूद है।

1035 हिजरी ब मुताबिक़ 1625 ईस्वी आप रहमतुल्लाह अलैह की रेहलत का साल है, **मज़ार मुबारक** कोठी कंधारी (महाराजा भरतपुर) के करीब मुत्तसिल नगला जवाहिर एक गुंबद के अंदर वाक़ेअ है जिसमें यकई अशआर ख़त्ते नस्तालीक़ से लिखे हुए हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज 99.100)

(10) मीर मुहम्मद सालेह कश्फ़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का बातिन इख़लासो अख़लाक़ से आरास्ता और ज़ाहिर ज़ोहदो सलाह के साथ पैरास्ता था, इल्मो फ़ज़ल से मौसूफ़ और ख़त्ताती में अपने वालिदे बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के बाकमाल शागिर्द थे।

कलाम निहायत शीरीं और सूफियाना होता था, **कश्फ़ी तख़ल्लुस** और **मश्कीं क़लम** विरासती ख़िताब था, इब्तिदाए हाल में फ़क्रो क़नाअत में ख़ुशहाल थे, आखिरे कार शाहजहाँ बादशाह के इसरार से अमीर ख़ुसरो देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के एक शेअर पर अमल कर के शाही मुलाज़िमत यानी नौकरी मंज़ूर फ़रमाई और पाँच सौ सिपाहियों के सरदार के मन्सब पर सरफ़राज़ हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह '**मनाक़िबे मुर्तज़वी**' और '**मज्मुअए राज़**' नामी किताब के मुसन्निफ़ हैं।

12 शाबान 1060 हिजरी बमुताबिक़ 1649 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस दारे फ़ानी से सफ़रे आखिरत इख़्तियार फ़रमाया और नगला जवाहिर में अपने वलिदे बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के गुंबद के करीब मशरिफ़ी जानिब यानी पूरब की जानिब चौखंडी के नीचे आराम फरमा है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 196.197)

(11) मीर मुहम्मद मोमिन अर्शी

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह के छोटे बेटे और मीर मुहम्मद सालेह कश्फ़ी रहमतुल्लाह अलैह के भाई हैं, अक्सर उलूम में आप रहमतुल्लाह अलैह कामिल महारत रखते थे, सुखन गोई में ताक़, नस्तालीक़ नवीसी में शोहरए आफ़ाक़ और अर्शी तख़ल्लुस करते थे। साहिबे ज़ौक्रो शौक़, आशिक़े वज्दे सिमाअ और साहिबे निस्बत बुजुर्ग़ थे।

इब्तिदाए हाल में शाहज़ादा सुलैमान शिकोह बिन दारा शिकोह की तालीमो तर्बीयत पर मामूर थे। आख़िरे कार मुतावक्किल हो कर गोशा नशीन हो गए।

90 बरस की उम्र और 1091 हिजरी ब मुताबिक़ 1680 ईस्वी में रेहलत फरमा कर आलमे बक्रा को कूच कर गए और अपने वालिदे बुजुर्ग़वार रहमतुल्लाह अलैह के क़ब्रिस्तान नगला जवाहिर में आसूदा हैं।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 203)

(12) अमीर मुहम्मद शरीफ़

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह के बहन के बेटे, मुरीद और सज्जादा नशीन थे, इल्मो फ़ज़ल से मौसूफ़ और ख़ते नस्तालीक़ बहुत ख़ूब व मर्बूब लिखते थे।

मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह ने लड़कों की तरह आप रहमतुल्लाह अलैह की परवारिश और तालीम व तर्बियत की थी और इन्ही की वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह ने ख़ुदा सनासी की आँखें रौशन की थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत गुमनामी पसंद थे, किताबत से अपनी गुज़र बसर फ़रमाते थे, जहांगीर बादशाह ने कातिबुस्सुल्तान का खिताब दिया था।

1054 हिजरी ब मुताबिक़ 1644 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हुआ, नगला जवाहिर के क़रीब अपने मामूं की दरगाह में आसूदा हैं यानी वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज184.185)

(13) मौलाना मक़सूद अली तबरेज़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह मुल्ला फ़ज़लुल्लाह बेग के बेटे थे, इल्मो फ़ज़ल ख़ुसूसन कमालाते शायरी से मौसूफ़ और अक्सर औसाफ़े हमीदा से आरास्ता थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने ख़्वाजा सलमान के मशहूर क़सीदा के जवाब में एक उम्दा क़सीदा क़ाज़ी यहया क़ज़वेनी की तारीफ़ में लिखा था, आप रहमतुल्लाह अलैह साहिबे दीवान हैं।

977 हिजरी ब मुताबिक़ 1569 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** क़ब्रिस्तान मुत्तसिल नगला जवाहिर मक़बरा मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह में एक चबूतरे पर वाक़ेअ है।

तावीज़ पर मौलाना मक़सूद अली तबरेज़ी लिखा हुआ है, बराबर में दूसरा तावीज़ है जिस पर फ़ातिमा सुल्तान बिनते मौलाना अब्दुल हैय्य नीशापुरी लिखा हुआ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज212.213)

नगला संगन

(14) शैख़ बा यज़ीद शेरवानी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद वली रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हैं। आज़ाद दिली के साथ ज़िंदगी बसर करते थे, वज्दे सिमाअ से इश्क़ था

आप रहमतुल्लाह अलैह के शोरो फ़ुगां से सिमाअ की मजलिस में नमकीनी पैदा हो जाती थी और आप रहमतुल्लाह अलैह के गिर्या यानी रोने से हमनफ़्स और नज़ारा करने वाले अस्हाब पर भी रिक्कत तारी हो जाती थी ।

दसवीं सदी के अखीर में दारुल हुज़ूर को ख़ाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया । सैय्यिद बा यज़ीद के नाम से अब सिर्फ़ एक मज़ार मौजूद है जो नगला संगन मुत्तसिल तख़्त पहलवान में वाक़ेअ है । (बोस्ताने अख़बार, पेज53)

आगरा के औलियाए किराम की
सीरत की Video देखने और सुनने
की लिए इस QR Code को
Scan कीजिए ।
Like Share & Subscribe Channel



आगरा वालों के लिए 12 किताबों का तोहफा

आगरा वाले आशिकाने औलिया के लिए खुशखबरी ! आगरा के औलियाए किराम की सीरत पर मुश्तमिल 12 किताबों को हासिल कर के पढ़ें और दूसरों को तकसीम कर के फैज़ाने औलिया को आम करें ।

- (1) आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत
- (2) सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत
- (3) आगरा के गौस शाह मुबारक गौस और 8 औलियाए किराम की सीरत
- (4) लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (5) हींग की मंडी व नाई की मंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत
- (6) बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत
- (7) जमना पार (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (8) मिर्ज़ा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत
- (9) कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत
- (10) कब्रिस्तान पीर गिलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत
- (11) ताजगंज (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (12) शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत
- (13) सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलियाए किराम की सीरत
- (14) नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलियाए किराम की सीरत
- (15) सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत
- (16) शैख सलीम चिश्ती की सीरत व फतेहपुर सीकरी की हिस्ट्री

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल करें :8808693818

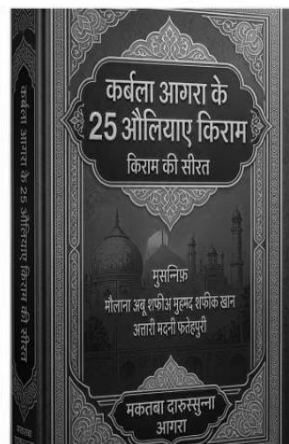
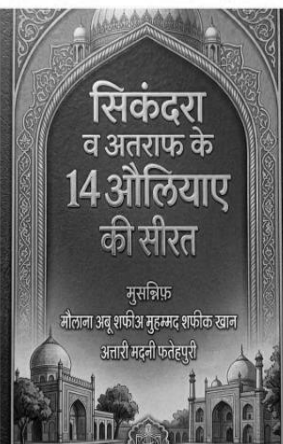
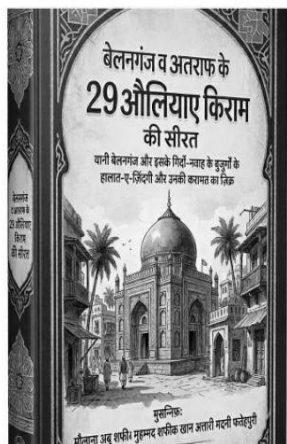
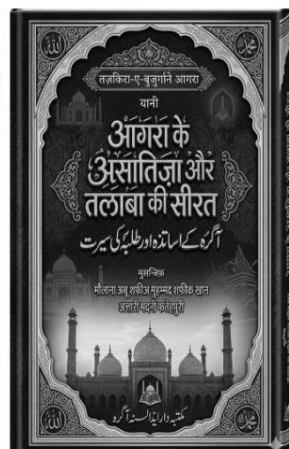
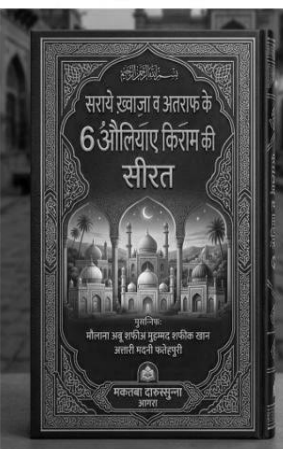
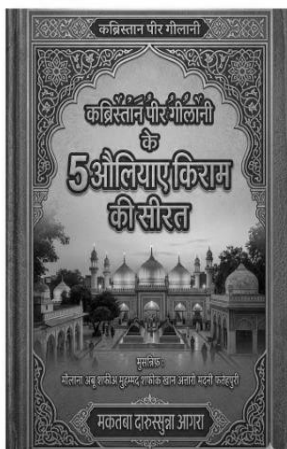
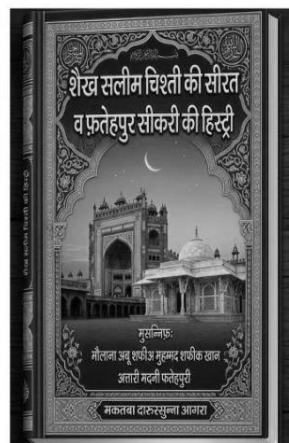
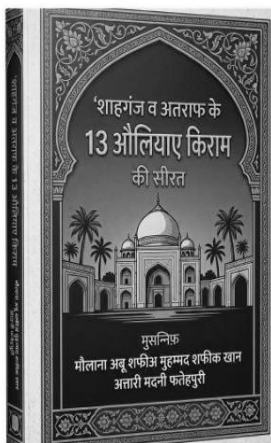
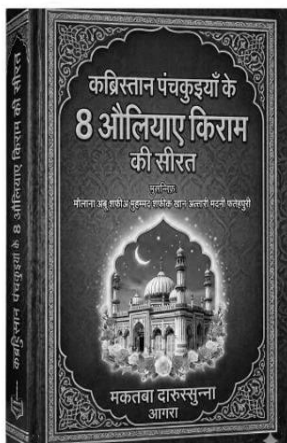
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्बए नूरे ख़ुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिरागे पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
ख़ानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिशती सुहर्वर्दी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते ख़ुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकू का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की ख़ाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की ख़ाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औक्रात क्या बेख़ुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं
शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

बोस्ताने खैर ला कर बोस्ताँ महका दिया

बोस्ताने खैर ला कर बोस्ताँ महका दिया
अहले सुन्नत के अकीदे को बड़ा चमका दिया
भूल बैठे दौलते दुनिया के चक्कर में जिन्हें
उन बुजुर्गों का तआरुफ़ आप ने करवा दिया
आगरा वालों पे हज़रत का बड़ा ऐहसान है
रब ने उनके हाथ से सच का अलम लहरा दिया
निस्बते मदनी से यूँ तो जल रहे थे पेशतर
और क़लम ने फिर जलन को और भी भड़का दिया
हक़ लिखा, बेबाक़ लिखा, ख़ौफ़े बातिल कुछ ना था
सच के शोअलों से हर इक़ फ़ितने को यूँ धमका दिया
इस शफ़ीक़े क़ादरी का रख तरो ताज़ा क़लम
जिस ने भूले रास्तों को रास्ते पे ला दिया
कब किसी मंसब की चाहत, कब सिले की आरज़ू
सिर्फ़ निस्बत ने येह सारा काम ही करवा दिया
जम रही थी धूल माज़ी के तख़य्युल की मगर
किस ने बेख़ुद आगरा को आईना दिखला दिया

शायर : वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान





फेहरिस्त

मुसन्निफ़ का तआरुफ़	3
नाम और निस्बत	3
दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म	3
तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत	4
खिलाफ़तो इजाज़त	5
खिदमते दीन	5
मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा	6
आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़	7
खानवादए चिशितया के बुज़ुर्गाने दीन	8
खानवादए नक्शबंदिया के बुज़ुर्गाने दीन	8
खानवादए शत्तारिया के बुज़ुर्गाने दीन	9
खानवादए मदारिया के बुज़ुर्गाने दीन	9
आगरा शहर का आबाद होना	10
सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद	11
दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	11
ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	12
बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	12
तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	14
आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	15
❧ सदक़ए जारिया का बेहतरीन मौक़ा ❧	17
सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की प्यारी सीरत	18
सिकंदरा और रुक़ता के दर्मियान	18

(1) शाह फ़तह अली	18
(2) शैख अब्दुल हकीम	18
(3) शाह मुश्ताक	20
कंधारी (खंदारी)	20
(4) शैख अब्दुल्लाह चिश्ती	20
मौज़ा मऊ के सिवाना	20
(5) बेदार शाह	20
(6) शैख महमूद बंजारा	21
मौज़ा घटवासन	21
(7) मीर सैय्यिद जलालुद्दीन क़ादरी	21
(8) हाजी शम्सुद्दीन अली हरवी	22
नगला जवाहिर	22
(9) मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी (मश्की क़लम)	22
(10) मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी	23
(11) मीर मुहम्मद मोमिन अर्शी	24
(12) अमीर मुहम्मद शरीफ़	24
(13) मौलाना मक़सूद अली तबरेज़ी	25
नगला संगन	25
(14) शैख बा यज़ीद शेरवानी	25